समकालीन राजनीतिक षड्यंत्र का प्रामाणिक दस्तावेज़ "बकरी"

डॉ. रवीन्द्रनाद मिश्र

भारतीय माटी से जुड़े निम्नमध्यवर्गीय सोच के रचनाकार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की रचनाओं में ग्रामीण एवं शहरी जीवन की संस्कृति की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी समाजवादी विचारधारा से प्रभावित सक्सेना के विचारों में रोमानी भावुकता, वेदना, करुणा, व्यंग्य, निम्न-मध्यवर्गीय स्थितियों और अनुभूतियों की गूँज दिखाई देती है। आज़ादी के पश्चात् राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन की विसंगतियों, स्वार्थग्रस्त नेतृत्व, टूटते हुए पुराने नैतिक मूल्य, साम्प्रदायिकता, महँगाई, भूख, शोषण, राजनीतिक भ्रष्टाचार, दूषित शिक्षा व्यवस्था और कागजी योजनाओं आदि को झेलती हुई भारतीय जनता का चित्रण सर्वेश्वर ने अपनी कृतियों में खूब किया है।

सर्वेश्वर मूलतः कवि है और इसके साथ ही उपन्यास, कहानी और नाटक के क्षेत्र में भी प्रयोग करते रहे। नाटक लेखन की शुरुआत इन्होंने 1948 में की। "जिन्दगी की लौ" और "मौत की घाटी" नामक दो नाटक लिखे। जिसका मंचन उसी वर्ष "इंडियन नेशनल थियेटर" इलाहाबाद में हुआ। कालान्तर में सर्वेश्वर का झुकाव लोकनाट्य शैली पर आधारित नाटकों की ओर हुआ जिसके परिणाम स्वरूप उन्होंने तीन नाटक, दो एकांकी और चार बाल नाटकों की रचना कर डाली।

भारतेन्दु युग के पश्चात् लोकनाट्य शैली की परम्परा लगभग विलुप्त सी हो गई थी जिसका कारण था आज़ादी की लड़ाई का आन्दोलन और बौद्धिकता का बढ़ता हुआ दबाव। समकालीन हिन्दी नाटकों में लोकनाट्य शैली का प्रारंभ 1965 से माना जाता है। मणिमधुकर के "रसगंधर्व", "बुलबुलसराय" और "दुलाईबाई" नाटकों ने परम्परागत नाटकीय शैली तक सीमित नाटकों की घेरबंदी को तोड़कर नाटक को खुला मंच, व्यापक जन-समूह और आम आदमी की पीड़ा को व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया। 1974 में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का "बकरी" नाटक आया जिसने लोकनाट्य परम्परा को एक सशक्त आधार प्रदान किया। "बकरी" ने नाटक के क्षेत्र में तहलका मचा दिया। दिल्ली का "जन नाट्यमंच" इसे कई महीनों तक राजधानी के विभिन्न भागों में खेलता रहा। लगभग पच्चीस प्रदर्शन इस के विश्वविद्यालय, कालेजों, कारखानों के मज़दूरों के बीच, आधीरात को चाँदनी चौक के चौराहे पर दुकानदारों के लिए हुए जिनके बीच तब तक आज का नाटक नहीं पहुँचा था। आपात-

कालीन स्थिति के बाद इसके प्रदर्शन पर रोक लगा दी गई। कालान्तर में इसके लगभग तीन सौ प्रदर्शन देश के विभिन्न शहरों और गावों में विभिन्न भाषाओं में हुए। नाटक की भूमिका में सर्वेश्वर ने इस नाटक के लिखे जाने के संबन्ध में तीन कारण दिए हैं-यह नाटक न लिखा जाता (1) यदि हिन्दी में कोई ऐसा नाटक होता जिसमें जनचेतना को लोक-भाषा और लोकरूपों के माध्यम से सामाजिक अन्याय के साथ जोड़ने का एक नया प्रकरण देखने को मिलता। (2) यदि हिन्दी के तथा-कथित श्रेष्ठ नाटक बड़े प्रेक्षाग्रहों, और विद्वत प्रेक्षक समाज के मुहताज न होते। (3) यदि हिन्दी के नाटककार यशः प्रार्थी न होकर आम आदमी की पीड़ा आम आदमी की जबान में आम आदमी के बीच ले जाना हिन्दी रंगमंच के लिए आज अनिवार्य मानते।

प्रस्तुत नाटक को फारसी रंगशैली और हिन्दी प्रदेश के प्रसिद्ध लोकनाटक "नौटंकी" शैली के मिले-जुले रूप में व्यक्त किया गया है। ग्रामवासियों की दयनीय स्थिति और उनकी मजबूरी का राजनेता किस प्रकार खुला दुरुपयोग कर रहे हैं, नाटक की केन्द्रीय व्यंजना है। "बकरी" शीर्षक राजनीतिक व्यंग्य के रूप में गाँधी की बकरी से है। सन् 1970 के पश्चात् गाँधीजी कर प्रासंगिकता को लेकर देशभर में कई चर्चाएँ परिचर्चाएँ आयोजित की जा रही है। विचारों के धरातल पर कई तीखी प्रतिक्रियाएँ भी सुनाई पड़ रही हैं। कहना न होगा कि आज़ादी के पश्चात् राजनेताओं ने गाँधी के नाम की दुकानें खूब चलाई और इसकी आड में भारतीय भोली-भाली अशिक्षित जनता का खूब शोषण भी किया। सक्सेनाजी ने इस नाटक में सत्ता के शोषण और जनता के शोषित स्वरूप को बहुत ही व्यंग्यात्मक मनोरंजक और चुटीली भाषा में व्यक्त किया है जिसमें सत्ता, व्यवस्था और उसके पहरेदारों पर साहसपूर्ण कटाक्ष भी है। नाटक के विषय में कुछ और कहने के पूर्व इसके कथ्य से परिचित हो लेना ज़्यादा सभीचीन होगा।

सम्पूर्ण नाटक दो अंकों में विभाजित है। प्रत्येक अंक में तीन-तीन दृश्य हैं। प्रत्येक दृश्य के प्रारम्भ की भूमिका में नट-नटी का संवाद है जिसमें प्रत्येक दृश्य घटित होनेवाली घटनाओं की सूचना दे दी जाती है। नाटक के प्रथम अंक की भूमिका में भी लेखक ने 27 वर्षों में आम जनता के अपने नेताओं द्वारा भी छले जाने पर तीखा व्यंग्य किया है। नाटक का मंगलाचरण नौटंकी के मंगलाचरण की तर्ज पर इस प्रकार है—

> सदा भवानी दाहिने सम्मुख रहें गणेश
> पाँच देव रक्षा करें, ब्रह्मा, विष्णु महेश।
> पांच देव सम पांच दल, लगी ढोंग की रेस
> जिनके कारण हो गया देश आज परदेस।

नाटक के प्रसंग को लेकर नट-नटी में विवाद होता है और नटी कहती है कि ऐसा नाटक दिखाओं जिसमें जन-जीवन की सच्चाई हो। नटी की बात सुनकर नट सत्य के स्वरूप की पहचान व्यंग्यात्मक एवं मनोरंजक शैली में कराता है।

> हे
> हे संकट मोचू
> बना दे हमें घोंचू।
> अपना सिर नोचूं न उनका मुंह नोचूं।
> हे संकट मोचू...
> किसकी रसोई में किसका कलेजा

कौन पकाए कुछ भी न सोचूं ।
हे संकट मोचू ··
हौं जड़भरत हमारे श्रोता
दर्द पकाए न छलके जितना खरोचूं ।
हे संकट मोचू···

प्रथम अंक में भिश्ती द्वारा बकरी पर आधारित गाए जानेवाले गीत से प्रेरणा लेकर दुर्जनसिंह, कर्मवीर और सत्यवीर नामक डाकू आम आदमी को ठगने एवं यश और धन की कामना से एक नई तरकीब पर विचार करते हैं। इस योजना में सहायक सिपाही के माध्यम से वे गाँव की गरीब औरत विपती की बकरी लाकर उसे गाँधी की बकरी घोषित करके फूलमाला पहनाकर एक मंडप के अन्तर्गत प्रतिष्ठित कर देते हैं । मंडप के बाहर "लोकसेवा सदन" का बोर्ड लगाकर समवेत स्वर में गाते हैं-सोने की छत हो, चाँदी के खम्भे, जय जगदम्बे । विपती द्वारा बकरी मांगने पर सिपाही उसे भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत वह कर देता है ।

बकरी को जगदम्बा माँ घोषित कर पूजा-अर्चन करते हैं और साथ ही धार्मिक प्रवचन भी देते हैं कि अगर देवी नाराज हो गई तो गाँव में सूखा एवं अकाल बढ़ेगा और लोग भूखे मरेंगे इसलिए देवी को खुश करने के लिए खूब चढ़ावा चढ़ाओं । यदि अधिक पैसा एकत्र हो गया तो तुम्हारे कल्याण केलिए "बकरी शाँति प्रतिष्ठान," "बकरी संस्थान", "बकरी सेवा संघ ,", और "बकरी मंडल" आदि बहुत सी संस्थाएँ बनाई जाएगी । डाकुओं की बात से प्रभावित होकर एवं अपनी अमंगलकामना से भयभीत होकर गाँव के लोग देवी को चढ़ावा चढ़ाते हैं । गाँववालों की मुर्खता पर एक युवक चिढ़ता है और उन्हें समझाता है कि बकरी देवी कैसे हो सकती है परन्तु वे उसकी बात नहीं मानते, इस प्रकार की बातें आजकल भी आए दिन समाचार पत्र में आती रहती हैं । गणेश भगवान का दूध पीना, महुआ बाबा का बोलना आदि बातें उपर्युक्त मत की पुष्टि करती हैं । इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश करनेवाले भारत में आए दिन इस प्रकार अंध विश्वास की बातें हफ्ती रहती हैं । समाज के कतिपय शोषक इन अंधविश्वासों के नाम पर गरीबों का शोषण आज भी कर रहे हैं ।

इस योजना की सफलता के पश्चात् दुर्जनसिंह और उसके साथी किसी अन्य योजना पर विचार करते हैं । आपस में विचार-विमर्श करके दुर्जनसिंह कर्मवीर को मंत्री बनवाने के लिए चुनाव में खडा करता है। चुनाव चिह्न के रूप में "बकरी के धन" का चयन किया जाता है और चुनाव जीतने के लिए उन सारे हथकडों का इस्तेमाल किया जाता है जो आज के आम चुनाव की नियति बन गई है । गाँव के युवक द्वारा उनके षडयंत्र का पर्दाफोश करने की धमकी देने पर उसे सिपाही द्वारा सुरक्षा अधिनियम कानून के उल्लंखन के तहत गिरफ्तार कर लिया जाता है । इसके पश्चात् जनता को डरा-धमकाकर और तमाम तरह की सुविधाओं का आश्वासन देकर कर्मवीर चुनाव जीत जाता है । सिपाही की पदोन्नति डी. आई. जी. के पद पर हो जाती है और जीत की खुशी में एक बडे भोज का आयोजन "बकरी सेवा संघ" की ओर से किया जाता है जिसमें देवी बकरी की बलि दे दी जाती है । सिपाही द्वारा यह पूछने पर कि सर! यह दावत मांसाहारी

होगी कि शाकाहारी। दुर्जनसिंह कहता है कि चूंकि यह गाँधीजी की नेक पवित्र बकरी है इसलिए यह दावत निरामिष दावत कही जाएगी। सभी लोग मिलकर जीत का जश्न मनाते हैं कि इसी बीच युवक जेल से छूटकर बकरी को ढूंढते हुए सभी ग्रामवासियों को लेकर वहाँ पहुँचता है और उन लुटेरों को बंदी बना लेता है।

प्रस्तुत नाटक में बकरी की हत्या को लेखक ने प्रतीकमान अर्थ में गाँधीजी के विचारों की हत्या बताई है। दुर्जनसिंह, कर्मवीर और सत्यवीर जैसे डाकुओं का आगे चलकर नेताओं में बदल जाना वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था पर सीधा व्यंग्य है। लेखक ने विपती और उसके गाँव वालों को भारतीय ग्रामीण अविवेक पूर्ण अंधश्रद्धाभक्त जनता के रूप में चित्रित किया है। आज भी भारत के ऐसे बहुत से भूभाग हैं जहाँ पर शिक्षा का प्रचार-प्रसार नहीं हुआ है और अंधविश्वास उसी रूप में विद्यमान है जैसा कि पहले था। "बकरी स्मारक निधि", "बकरी शांति प्रतिष्ठान", "बकरी सेवा संघ" आदि जैसी संस्थाओं के नाम से हमारे सरकारी व्यवस्था तंत्र की कलई खुल जाती है। सिपाही का डी. आई. जी. बनना आदि बातें जानी पहचानी सी लगती है। चुनाव के दौरान कर्मवीर, सत्यवीर और दुर्जनसिंह द्वारा दिए गए भाषणों की शब्दावली और उनकी मनःस्थितियों से आज का राजनीतिक चरित्र उजागर हो उठता है।

कर्मवीर: हम जन्म के ठाकुर हैं। कर्म से
ब्राह्मण और सेवक हरिजनों के हैं।
हमें सबका वोट मिलना चाहिए।

सिपाही: जिसे न देना हो अभी साफ-साफ कह दो धोखे में न रखना।

[ग्रामीण चुपचाप सिर झुका देते हैं।]

सिपाही: शाबाश! हमें तुमसे यही उम्मीद थी।

कर्मवीर: चुने जाते ही हम तुम्हारे गाँव तक की सड़क पक्की कर देंगे। सड़क पर पानी नहीं भरेगा।

सारे भ्रष्टाचार और विसंगति की ओर ग्रामवासियों को जाग्रत करने की शिक्षा युवक द्वारा दिखाई गई है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का कविरूप नाटक में सर्वत्र विद्यमान है। शोषकों के प्रति आक्रोश और शोषितों के प्रति सहानुभूति के जो भाव कविताओं में व्यक्त हैं उनका स्वरूप इस नाटक में देखने को मिलता है। लेखक को युवशक्ति और उसके आक्रोश पर भरोसा है। बकरी में सत्ता के शोषण और आम आदमी की नियति पर करारा व्यंग्य है, जिसमें समसामयिक राजनीतिक व्यवस्था पर मीठी चुटकी ली गई है–

दौलत की है दरकार ए सरकार आपको
सबकी उजाड़ चाहिए धरबार आपको,
मक्कारी, ढोंग, छल, फरेब आप बाँटिए
बदले में मगर चाहिए एतबार आपको,
आदत जो बढ़ गई है दो अब छूटती नहीं,
कोई शिकार चाहिए हर बार आपको।

आम आदमी का असन्तोष, विद्रोह, खीझ भरी झुंझलाहट और देश की स्थिति के प्रति उसकी मार्मिक वेदना इस प्रकार व्यक्त की गई है:

सेवा यहाँ पर स्वार्थ है,
और स्वार्थ ही परमार्थ है,।
कोई किसी से है न कम.
है देश के फटे करम।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने इस नाटक के माध्यम से पारम्परिक संगीत, नृत्य और अभिनय की संतुलित दृष्टि ही नहीं दी बल्कि विशाल दर्शक समूह को भी प्रभावित किया और सारे व्यंग्य और करुणा को उनके ही माध्यम से व्यक्त किया।

नाटक में भाषा के विविध रूपों, बिम्बों, प्रतीको और मुहावरों का बड़ा सुन्दर प्रयोग मिलता है लोकभाषा और वह भी ग्रामीणों के मुंह से उनकी बोली का उनके लहजे में बडा सुन्दर प्रयोग किया गया है। इसके साथ ही ग्रामीणों की समस्याओं के, अभावों और विवशताओं को भी उनकी ही वाणी में कहलाने का अद्‌भुत प्रयास है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है।

औरत : उर्र, उर्र, उर्र। अरे मिल गई. मिल गई. मिल गई हुजूर ई बकरी हमार है। ईहाँ कौन बोध लावा।

सिपाही : बकवास बंद करो। यह गाँधीजी की बकरी है।

औरत : नाहीं हुजूर, पाला पोसा है। ई ई हमार है।

सिपाही : जानती है वह कितने की बकरी है ?

औरत : जमींदार साहब बीस रुपिया देत रहेन हम नहीं दिया, हम को, बच्चों को जान से पियारी है।
हम गरीब आदमी है, दुइ बखत दूध...

उक्त संवाद से ग्रामीण-जीवन का सुन्दर बिंब प्रकट हो जाता है।

युवक सिपाही और कर्मवीर के संवाद की भाषा का एक नमूना द्रष्टव्य है जिस में आम चुनाव के दौरान प्रयुक्त होने वाली भाषा का सुन्दर चित्रण किया गया हैं।

युवक : जानता हूँ। आप बकरी की पूजा इसलिए कराते हो ताकि सब बकरी बन जाएं। मैं बकरी नहीं हूँ। किसी की बकरी नहीं बनूंगा।

सिपाही : नहीं साले तू भेड़िया है।

कर्मवीर : और भेड़िया खुला नहीं दौड़ा जाता। दीवान जी, इसे तब तक जेल में सड़ाओं जब तक बकरी न बन जाए। हथियार बरामद कराओं साले के पास से।

सिपाही उसे घसीट कर ले जाता है। दुर्जनसिंह का प्रवेश। आते ही आराम कुर्सी पर बैठ जाता है और सिपाही एक जाम भरकर देते हुए गाता है–

तमाम हिस्की तमाम रम,
मिला करे प्रभु जनम–जनम,
हो संग कलेजी गरम,
ओ एक बाला नरम–नरम।

चुनाव व्यवस्था मे व्याप्त राजनेताओं की गुंडागर्दी, तानाशाही, विलासिता और षडयंत्र पूर्व व्यवहार को उक्त कथन के माध्यम से दर्शाया गया है जिसे पढ़कर ऐसा लगता है कि यह सब तो बहुत कुछ जाना और भोगा हुआ सत्य है।

नाटक के मंचन की लोकप्रियता का उल्लेख मैं ने पहले ही कर दिया है। इसका मंचन किसी भी स्थान कम खर्च और बिना किसी तामझाम के किया जा सकता है। नौटंकी एवं पारसी रंग शैली के मिश्रण के कारण जहाँ इस में एक ओर नगाड़ा-नर्तन और नौटंकी की प्रचलित धनों पर आधारित भजन, और फिल्मी धुनें है जब तो दूसरी ओर पारसी नाटकों जैसी अभिनयात्मकता, बीच-बीच में

तुकबंदी, पद्य एवं मनोरंजन पूर्ण संवाद भी मौजूद हैं। पूरे नाटक के गीतों की रचना बहुत सरल है और ऐसी प्रचलित धुनों के आधार पर गीतों का प्रयोग किया गया है कि सुनते ही धुन पकड़ में आ जाती है। राष्ट्रीय गान को बकरी माता के जय-जय गान में बदलकर सम्पूर्ण नाटकीय व्यंग्य को मूर्त किया गया है।

तन मन धन उन्नायक जब है
जय जय बकरी माता।
दुर्जन सज्जन आएं
सब तेरे गुन गाएं
हे त्राता सुख दाता।
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे

इसी प्रकार नाटक में अन्य प्रचलित धुनों का सुन्दर प्रयोग किया गया है जिस से नाटक में काफी सजीवता आ गई है। इन तमाम खूबियों के साथ नाटक की स्तरीयता को लेकर सन्देह उत्पन्न होता है, वैसे नाटक का प्रथम अंक काफी चुस्त, गतिशील और प्रभावपूर्ण लगता है लेकिन दूसरे अंक में स्थितियों का बड़ा खुलासा चित्रण गया है। अंत में युवक द्वारा तीनों डाकुओं को बन्दी बनाया थोड़ा असहन लगता है। नाटक को सुखान्त बनाने का प्रयास किया गया है। युवक जिस रूप में व्यक्त किया गया है उस में रुमानीभाव और अपरिपक्वता कुछ अधिक है।

लगता है कि शिल्पगत कसाव और चुस्त-दुरुस्त नाटक लिखने का आग्रह नाटककार का नहीं है। फिर भी मानना पडेगा कि सक्सेना जी ने नाटक को नया शिल्प प्रदान कर उसे रंगशाला की चहारदीवारी से निकालकर खुला मंच प्रदान किया और आम आदमी के जीवन से जोड़ा। नाटककार की दृष्टि में जो एक संकल्प जताजगी एवं रचनात्मक विद्रोह होना चाहिए, वह बकरी के माध्यम से सर्वेश्वर में दिखाई देता है। कविता में अभिव्यक्त मध्यवर्गीय एवं निम्नवर्गीय सोच नाटककार के रूप में भी व्यक्त हुई है।

वर्तमान संदर्भ में जहाँ भ्रष्टाचार को सामाजिक मान्यता मिल गई हो, क्या करें और क्या न करें जैसी विडम्बनापूर्ण स्थिति बन गयी हो और मूल्य अपना अर्थ खोज रहे हो, ऐसी विषय परिस्थितियों में इस प्रकार की रचनाएँ हमें सचेत और सतर्क करने में सहायक सिद्ध होती है, साथ ही समय के बदलाव को गहरी संवेदना और समझ के साथ उद्धारित भी करती है।

अध्यक्ष हिन्दी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय,
गोवा – 403 205.